प्र.1- फ्रांसीसी क्रांति में चैतन्य बुर्जुआवर्ग के उदय एवं भूमिका का मूल्यांकन करें।

(200 शब्द)

मॉडल उत्तर

भूमिका में निम्न बातों को शामिल करें-

- चैतन्य बुर्जुआ वर्ग के उदय और भूमिका की चर्चा करते हुए यह बताएं की बुर्जुआ वर्ग बहुत सशक्त व समृद्धशाली था।

मुख्य विषय वस्तु-

- **प्रथम पैरा में उदय के कारणों पर चर्चा करें-**
  - ⇨ पुर्नजागरण और प्रबोधन के विचारों से प्रभावित था।
  - ⇨ चूंकि आर्थिक रूप से सशक्त था इसलिए राजनीति में भागीदारी चाहता था।
  - ⇨ सामाजिक भेदभाव पूर्ण व्यवस्था से विक्षुब्ध था, इसलिए समानता चाहता था।
- **द्वितीय पैरा में-**
  - ⇨ बुर्जुआ वर्ग भूमिका पर चर्चा करते हुए बतायें कि ये हमेशा अपने हितों को लेकर क्रांति पर हावी रहा।
  - ⇨ आर्थिक नीति पर इसका प्रभाव, निम्न वर्ग को आवश्यकता के अनुसार साथ लेकर क्रांति में शामिल होता था।
  - ⇨ मध्य यूरोप और पूर्वी यूरोप में इस वर्ग का अभाव था अत: वहां सामाजिक टकराहट की संभावना न थी। जितना कि फ्रांसीसी समाज में।
  - ⇨ नेशनल एसेम्बली और लेजिस्लेटिव एसेम्बली पर इस वर्ग के हावी होने को दर्शाएं।

निष्कर्ष (संक्षिप्त व संतुलित दें)

प्र.2- 1830 से 1848 के बीच यूरोप में हो रहे मूल परिवर्तनों पर चर्चा करें तथा 1848 की क्रांति के महत्व को रेखांकित करें। (200 शब्द)

मॉडल उत्तर

भूमिका में निम्न बातों को शामिल करें-

- 1830 से 1848 के काल को तीव्र वैचारिक उठापटक का काल बताते हुए निरंतरता तथा परिवर्तन की शाक्तियों के बीच निरंतर संघर्ष का दौर बताएं।
- **प्रथम पैरा में-**
  - ⇨ निरंतरता के शक्ति का प्रतिनिधित्व राजतंत्र, कुलीन वर्ग और चर्च कर रहे थे तथा परिवर्तन की शक्ति का प्रतिनिधित्व विचारधारा के स्तर पर उदारवाद और राष्ट्रवाद को बताये।
  - ⇨ भौतिक स्तर पर परिवर्तन औद्योगिक क्रांति लेकर आया।
  - ⇨ सामाजिक बदलाव।
- **द्वितीय पैरा में-**
  - ⇨ 1848 की क्रांति दीर्घकालीन महत्व रखती है, श्रमिक वर्ग की आशा नष्ट हुई पर उनमें चेतना अवश्य जगी जिसने आगे जाकर समाजवादी विचार को पोषित किया तथा श्रमिक संगठन बनें।
  - ⇨ पूर्वी यूरोप में सामंवाद का पतन, सामाजिक-आर्थिक उपलब्धियों पर चर्चा करें।
  - ⇨ तात्कालिक रूप से अपने लक्ष्य प्राप्ति में असफल रहा परंतु ऐतिहासिक विचारों को मूर्त रूप देने में महत्व रखता है।
  - ⇨ राष्ट्रवाद ने उदारवाद को अपने लक्ष्य में बाधक समझा तो वही समाजवाद ने भी कडी सबक ली।
  - ⇨ तात्कालिक उपलब्धि में मेटरनिक के शासन की समाप्ति हुई।

निष्कर्ष (संक्षिप्त व संतुलित दें)

प्र.3- ''क्या मार्क्सवाद प्रभावहीन रहा''? मार्क्सवाद की सीमाओं का उल्लेख करते हुए कथन का परीक्षण करें। (200 शब्द)

मॉडल उत्तर

भूमिका में निम्न बातों को शामिल करें-

- मार्क्सवाद का संक्षिप्त परिचय देते हुए प्रभावों की चर्चा करें और बतायें कि इतिहास को देखने का आर्थिक नजरिया विकसित हुआ।
- **प्रथम पैरा में-**
  - ⇨ मार्क्सवाद के प्रभावों के मुख्य बिंदुओं को लिखें तथा इससे सामाजिक वर्ग को देखने की नई दृष्टि आई।
  - ⇨ मुख्य राजनीतिक वार्तालाप का हिस्सा श्रमिक और उसका श्रम बना। श्रम की प्रकृति और भूमिका की व्याख्या हुई।
  - ⇨ सर्वहारा वर्ग में चेतना जगी, बुर्जुआ वर्ग का शोषक रूप सामने आया।
- **द्वितीय पैरा में-**
  - ⇨ प्रथम पैरा से लिंक बनाते हुए मार्क्सवाद की सीमाओं पर चर्चा करें।
  - ⇨ पूंजीवाद की शक्ति को कम आंका, राज्य को वर्गीय उपकरण कहा किन्तु राज्य हर वर्ग के समर्थन पर टिका होता है।
  - ⇨ क्रांति औद्योगिकृत देश में न होकर पिछड़े देशों में हुई अत: मार्क्स गलत भविष्यवक्ता सिद्ध हुआ।
  - ⇨ वर्ग विहीन और राज्य विहीन समाज का सपना, सर्वहारा की तानाशाही अतिश्योक्ति साबित हुई।
  - ⇨ क्रांति तृतीय चरण में पहुंच ही नई पाई और मार्क्स की राज्यविहीन समाज की अवधारणा यूटोपिया सिद्ध हुआ।

निष्कर्ष (संक्षिप्त व संतुलित दें)

प्र.4- इटली के एकीकरण में काबूर की भूमिका को स्पष्ट करें।

(200 शब्द)

मॉडल उत्तर

भूमिका में निम्न बातों को शामिल करें-

- इटली के एकीकरण में अनेक नेता व संगठनों में, काबूर की भूमिका को प्रमुखता से दर्शाएं।
- **प्रथम पैरा में-**

  ⇨ काबूर द्वारा किये गए प्रयासों को लिखे तथा इसकी योग्यता पर चर्चा करें।
- इटली में आर्थिक सुधार किया (कृषि बैंकिंग, वित्तीय सुधार)।
- सैन्य सशक्तिकरण पर बल।
- ब्रिटेन फ्रांस से व्यापारिक समझौता।
- अंतर्राष्ट्रीय राजनीति का उपयोग।
- अपनी योग्यता के बल पर इटली के मुद्दे का अंतर्राष्ट्रीयकरण।
- कूटनीति का उपयोग।

निष्कर्ष (संक्षिप्त व संतुलित दें)